RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

बौद्ध धर्म और विश्व शान्ति

निर्मला

सहायक प्रोफेसर, वैश्य कन्या महाविद्यालय समालखा

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 04 June 2019

Keywords
बौद्ध धर्म, शांति, शासन

ABSTRACT

विश्व के सभी धर्मों में बौद्ध धर्म का अद्वितीय स्थान है।बौद्ध धर्म के बारे में लोगों के मन में प्रायः एक भ्रान्ति रहती है की यह मात्र एक धर्म है जो हमें आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है। जबकि वास्तव में बौद्ध धर्म सामाजिक , सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में लोक कल्याण की दीक्षा देता है।इस धर्म ने मानवलोक कल्याण की भावना को जन्म दिया और शान्ति का उपदेश दिया।लोगों को समता , करुणा व प्यार के साथ रहना सिखाया । यही कारण है कि जब - जब बौद्ध शासकों का शासन हुआ देश की राजनैतिक व सांस्कृतिक सीमाएं बढ़ती ही गई । उनके समय में भारत कभी परतंत्र नहीं हुआ।विश्व शान्ति के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती राष्ट्रों के बीच में बसी हुई घृणा और हिंसा की भावना है । विभिन्न राष्ट्रों में आपस में वैर भाव फैला हुआ है महात्मा बुद्ध का शान्ति का सन्देश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह पहले थासंसार में मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। बौद्ध धर्म लोगों को मानवता और शान्ति का सन्देश देता है कई राष्ट्रों ने बौद्ध धर्म को अपनाकर स्वयं को हिंसा से दूर कर लिया। इन राष्ट्रों में शान्ति स्थापित हो चुकी है । बौद्ध धर्म में समानता , दया , करुणा व परोपकार की भावना आदि गुणों के कारण पूरे विश्व के लोग बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

बौद्ध धर्म का शान्ति से अटूट सम्बन्ध है । महात्मा बुद्ध ने उस मानवता का सन्देश दिया जहाँ जाति , धर्म और सम्प्रदाय राष्ट्र की सीमाएँ नहीं होती। बौद्ध धर्म के इतिहासमें एक भी पृष्ठ ऐसा नहीं है जो रक्तरंजित हो।बौद्ध धर्म के पास केवल एक ही तलवार है प्रज्ञा की तलवार और उसका एक ही शत्रु है। अज्ञानबौद्ध धर्म और शान्ति का सम्बन्ध आकस्मिक न होकर अनिवार्य है । बौद्ध धर्ममें ईर्ष्या तथा द्वेषवश एक दूसरे का अहित करने के लिए हिंसा का सहारा लेने का तीव्र विरोध करते हुए बुद्ध ने विश्व को मानवता का जो सन्देश दिया वह पूरी तरह करुणा , मैत्री और समता के सिध्दांत पर आधारित है ।

महात्मा बुद्ध ने बौद्ध भिक्षुओं को लोगों के हित और कल्याण के लिए प्रचार करने का उपदेश दिया । महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म के माध्यम से पीड़ित मानवता का कल्याण करके मानव उत्थान का कार्य किया। बुद्ध का धर्म ज्ञान, शान्ति और निर्वाण की ओर ले जाता है ।बौद्ध धर्म में दूसरों के प्रति द्वेष तथा हिंसा की भावना का परित्याग करने के शिक्षा दी गई । बौद्ध धर्म की इन शिक्षाओं से विश्व में शान्ति स्थापित करने की कोशिश की जा सकती है । बौद्ध धर्म के आदर्शों का पालन करने हिंसा , प्रतिहिंसा एवं प्रतिद्वन्दता की भावना का परित्याग करके विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है ।महात्मा बुद्ध ने उस समय के शासकों की शोषक नीति को देखकर कहा था हिंसा , प्रतिहिंसा युद्ध, प्राणी का व्यापार , मध व्यापार,माँस व्यापार और विष व्यापार करके इनके द्वारा जीवन निर्वाह करना झूठी जीविका है । बौद्ध धर्म को विश्व व्यापक धर्म बनाने के लिए इसके सिध्दांतों का सरलीकरण आवश्यक था अतः यह कार्य चौथी बौद्ध संगीति में सामान्य एवं सर्वमान्य सिध्दांत की रूपरेखा तैयार करने का लक्ष्य रखा गया ।

बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के कारण सम्राट अशोक ने अपने जीवन में युद्धों एवं हिंसा को त्याग कर अहिंसा की नीति अपनाई । विदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करवाया । अशोक महान का काल बौद्ध धर्म का स्वर्णिम काल माना जाता है। सम्राट अशोक ने शस्त्र विजय का परित्याग कर 'धर्म विजय' का बीड़ा उठाया। अपनी आक्रामक साम्राज्य वादी नीति त्याग कर विश्व विजय की नीति ग्रहण की । बौद्ध धर्म से प्रेरणा लेकर अशोक ने परोपकार के कार्य स्वदेश और विदेश दोनों में किए जिससे बौद्ध धर्म की करुणा से लोग प्रभावित हो । जीव हिंसा के प्रति घृणा लोगों में बौद्ध धर्म कीनीति के कारण ही उत्पन्न हुई ।सम्राट अशोक ने विदेशों में बौद्ध धर्म के अहिंसा आदि सिध्दांतों के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्दर व पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा । बौद्ध धर्ममें ईर्ष्या तथा द्वेषवश एक दूसरे का अहित करने के लिए हिंसा का सहारा लेने का तीव्र विरोध किया। बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ही सम्राट अशोक ने बलि प्रथा और पशु हत्या (मांसाहार के लिए) पर रोक लगाई । अशोक ने जनता के कल्याण के लिए विशेष प्रबन्ध करवाए । भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। महात्मा बुद्ध का मानना था कि सभी प्राणी दण्ड से डरते है और सबको जीवन प्रिय है इसलिए सबको अपना समझकर न किसी के साथ हिंसा करें और न किसी को हिंसा करने के लिए प्रेरित करें। महात्मा बुद्ध के सिध्दांतों के कारण ही सम्राट अशोक ने युद्धों की नीति का त्याग कर अहिंसा की नीति का पालन करना शुरू किया।

डॉ अम्बेडकर ने तार्किकता, समता, बंधुत्व और मानव कल्याण हेतु बौद्ध धर्म को उपयुक्त माना ।उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण करके इसके समतावादी विचारो से समाज में समानता स्थापित कराई।बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के माध्यम से समाज में परिवर्तन का बीड़ा उठाया । डॉ अम्बेदकर ने कहा ," मुझे बौद्ध धर्म पसंद है क्योंकि उसमें ऐसे तत्वों का समावेश है जो अन्य धर्मों मेंनहीं पाए जाते हैं" । बौद्ध धर्म प्रज्ञा की शिक्षा देता है । वह करुणा अर्थात् मैत्री तथा समता की शिक्षा देता है जो व्यक्ति के अच्छे और सुखी जीवन के लिए आवश्यक भी है । बौद्ध धर्म के अनुसार वैर कभी वैर से शांत नहीं होता वह अवैर से ही शांत होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दुर्बल राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा चलाएऔर दबाए जाते हैं ठीक वैसे ही जैसे अधिकतर समाज के दुर्बल वर्ग समृद्ध और शक्तिशाली वर्गों के हाथोंकष्ट पाते हैं। अतः अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यदि बौद्ध धर्म के अहिंसा व मानव कल्याण के सिध्दांतों का पालन किया जाए तो कमजोर राष्ट्रों को शोषण से मुक्त किया जा सकता है ।

वर्तमान समय मे विश्व और छोटा हो गया है और विश्व के लोग लगभग एक समुदाय के हो गए हैं ।आज के समय मे गम्भीर समस्याओं के कारण अनेक देश एक दूसरे के समीप जा रहे हैं । जनसंख्या वृद्धि , घटते प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरणीय संकट आदि के कारण पृथ्वी का अस्तित्व ही खतरे मे पड़ गया है। बौद्ध धर्म इस समय की चुनौतियों का सामना करने मे बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है । बौद्ध धर्म के आपसी प्रेम और करुणा के सिध्दांतों द्वारा विभिन्न देशों मे पारस्परिक सौहार्द कायम किया जा सकता है । बौद्ध नीति के अनुसार जितने अधिक राष्ट्र एक दूसरे पर निर्भर होंगे उतना अधिक उनका कल्याण होगा।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि हम बहुत सौभाग्यशाली है कि उसने दुनिया को बुद्ध और उनके उपदेश दिए । उन्होंने कहा कि बुद्ध का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह ढाई सहस्राब्दी पहले था।

डॉ अम्बेडकर के अनुसार बौद्ध धर्म न केवल भारत का हित साधन कर सकता है बल्कि पूरे विश्व का हित साधन कर सकता है । बौद्ध धर्म विश्व शान्ति के लिए बेजोड़ है ।अल्बर्ट आइंस्टाइन ने कहायदि कोई ऐसा धर्म हैजो आधुनिक वैज्ञानिक समस्याओं का सामना करने की क्षमता रखता है, तो वह बौद्ध धर्म है । बौद्ध धर्म की देन केवल शान्ति स्थापना के क्षेत्र मे ही नहीं है बल्कि विभिन्न क्षेत्रों मे इस धर्म ने प्रभाव डाला है। एक अन्य लेखक का कथन है कि यदि हमसे पूछा जाए कि किस धर्म ने विश्व शांति को सबसे अधिक बढ़ाया है तो इतिहास का निष्पक्ष निरीक्षण हमें बौद्ध धर्म कहने को बाध्य करेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

(1) डॉ शिवस्वरूप सहाय, प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन
(2) सत्यकेतु विद्यालंकार, प्राचीन भारत का धार्मिक और आर्थिक जीवन\
(3) डॉ रमेश चन्द्र मजुमदार, प्राचीन भारत
(4) सी. डी. नाईक, बौद्ध वचन तथा अंबेडकर विचार
(5) धनपति पाण्डेय, प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास
(6) डॉ श्रीकृष्ण ओझा, भारतीय इतिहास चिन्तन का इतिहास
(7) डॉ बी.आर. अम्बेडकर, भगवान बुद्ध और उनका धर्म

RRIJM 2015, All Rights Reserved